

# जीत की पीपनी



पढ़ना है समझना



प्रथम संस्करण : अक्टूबर 2008 कार्तिक 1930

पुनर्मुद्रण : दिसंबर 2009 पौष 1931

© राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, 2008

P91 I8T NSY

पुस्तकमाला विर्माण समिति

कंचन सेठी, कृष्ण कुमार; ज्योति सेठी, तुलदल विश्वास, मुकेश मालवीय,  
राधिका मेनन, शालिनी शर्मा, लता पाण्डे, स्वाति वर्मा, सारिका बशिर,  
सौमा कुमारी, सोनिका कौशिक, सुशील भुक्कल

सदस्य-समन्वयक - लतािका गुप्ता

चित्रांकन - निधि बाधवा

संज्ञा रक्षा आवरण - निधि बाधवा

डी.टी.पी. ऑपरेटर - अर्चना गुप्ता, नीलम चौधरी, अंशुल गुप्ता

आभार ज्ञापन

प्रोफेसर कृष्ण कुमार, निदेशक, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्,  
नई दिल्ली; प्रोफेसर वसुधा कामेश, संयुक्त निदेशक, केंद्रीय शैक्षिक प्रशासनिक  
संस्थान, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर के. के.  
अरिस्त, विभागाध्यक्ष, प्रायोगिक शिक्षा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण  
परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर रामरत्न शर्मा, विभागाध्यक्ष, भाषा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक  
अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर मजुल्ल मधुर, अध्यक्ष, रीडिंग  
इयलैपमेंट सेल, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली।

राष्ट्रीय समीक्षा समिति

श्री अशोक चारपेयी, अध्यक्ष, पूर्व कुलपति, महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी  
विश्वविद्यालय, वरुण; प्रोफेसर फरीद अहमद, खान, विभागाध्यक्ष, शैक्षिक अध्ययन  
विभाग, जर्मिया मिलिया इस्लामिया, दिल्ली; डा. अणुचानंद, रीडर, हिंदी विभाग,  
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली; डा. राजनम सिन्हा, सी.ई.ओ., आई.एल. एवं एफ.एस.,  
मुंबई; सुश्री नुसुल हसन, निदेशक, नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली; श्री रंजित धनकर,  
निदेशक, दिगंबर, जयपुर।

डा. जी.एन.एस. पैपा का मुद्रित

प्रकाशन विभाग में संचित, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अचिनंद धर्म,  
नई दिल्ली 110016 द्वारा प्रकाशित तथा बंधन प्रिंटिंग प्रैस, सी-28, इंडस्ट्रियल एरिया, साइर-ए,  
मद्रास 600104 द्वारा मुद्रित।

ISBN 978-81-7450-898-0 (बद्ध-पैर)  
978-81-7450-872-0

बरखा क्रमिक पुस्तकमाला पहली और दूसरी कक्षा के बच्चों के लिए है। इसका उद्देश्य बच्चों को 'समझ के साथ' स्वयं पढ़ने के मौके देना है। बरखा की कहानियाँ चार स्तरों और पाँच कथावस्तुओं में विस्तारित हैं। बरखा बच्चों को स्वयं की खुशी के लिए पढ़ने और स्थायी पाठक बनने में मदद करेगा। बच्चों को रोचकता भी छोटी-छोटी घटनाएँ कहानियों जैसी रोचक लगती हैं, इसलिए 'बरखा' की सभी कहानियाँ दैनिक जीवन के अनुभवों पर आधारित हैं। बरखा पुस्तकमाला का उद्देश्य यह भी है कि छोटे बच्चों को पढ़ने के लिए प्रचुर मात्रा में किताबें मिलें। बरखा से पढ़ना सीखने और रचनाशील पाठक बनने के साथ-साथ बच्चों को पाठ्यचर्या के हरेक क्षेत्र में संज्ञानात्मक लाभ मिलेगा। शिक्षक बरखा को हमेशा कक्षा में ऐसे स्थान पर रखें जहाँ से बच्चे आसानी से किताबें उठा सकें।

#### सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रकाशन की पूर्वसूचना के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को छापा गया इलेक्ट्रॉनिकी, फोटो, फोटोकॉपी, डिजिटल अथवा किसी अन्य विधि से पुनः प्रयोग करना इसका ग्राहक अथवा प्रसारक विरुद्ध है।

एन.सी.ई.आर.टी. के प्रकाशन विभाग के कार्यालय

- एन.सी.ई.आर.टी. भवन, श्री अरविंद मार्ग, नये दिल्ली 110 014 फोन : 011-26562708
- 108, 100 फीट रोड, लेबो एक्सप्रेस, सोल्डेको, बरसातरी III सेक्टर, बंगलूर 560 085 फोन : 080-26725790
- नवजीवन टूरट भवन, कोकथा नवजीवन, भायवसबाद 380 014 फोन : 079-27541446
- सी.एन.एम.सी. भवन, विक्टोरिया पार्क का स्ट्रीट पिनकोड, कोलकाता 700 114 फोन : 033-25539454
- सी.एन.एम.सी. कॉम्प्लेक्स, मल्लोर्ग, पुणे 411 021 फोन : 0201-26748609

प्रकाशन सहयोग

सहयत्न, प्रकाशन विभाग : श्री. राजकुमार मुख्य संयोजन अधिकारी : दिनेश कुमार  
मुख्य संपादक : रवींद्र ठाकुर मुख्य जागरण अधिकारी : शोभा पाण्डे

# जीत की पीपनी



जीत



बबली





एक दिन जीत की पेंसिल कहीं खो गई।  
उसने अपनी पेंसिल हर जगह ढूँढ़ी।



जीत ने पेंसिल अपने बस्ते में ढूँढ़ी।  
उसके बस्ते में बहुत सारा सामान था।





बबली ने जीत का बस्ता उलट दिया।  
उसमें से गिल्ली, पंख, धागे, ढक्कन और पत्थर गिर पड़े।



जीत के बस्ते में से और कई चीजें निकलीं।  
बबली ने आम की एक गुठली उठा ली।





समीर आम की गुठली को देखने लगा।  
जीत ने बताया कि वह पीपनी है।





जीत ने आम की गुठली को घिसकर पीपनी बनाई थी।  
पीपनी से बहुत जोर की आवाज़ निकलती थी।



जीत ने पीपनी बजाने को कहा।  
बबली ने ज़ोर से पीपनी बजाई।





इतने में मास्टर जी आ गए।  
उन्होंने पीपनी की आवाज़ सुन ली थी।





सारे बच्चे अपनी जगह पर वापिस बैठ गए।  
सबने अपनी-अपनी किताब निकाल ली।



मास्टर जी ने पूछा कि आवाज़ कौन कर रहा है।  
सब चुप रहे।





मास्टर जी ने दुबारा पूछा।  
बबली ने बता दिया कि जीत पीपनी लाया था।





मास्टर जी ने पीपनी माँगी।  
बबली ने डरते-डरते पीपनी मास्टर जी को दे दी।



मास्टर जी ने पीपनी बजाने की कोशिश की।  
पीपनी बजी ही नहीं।





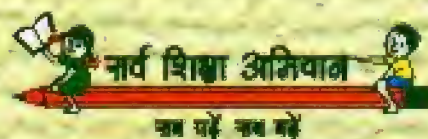
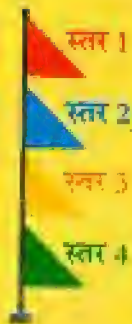
मास्टर जी बोले कि कोई बजाकर दिखाओ।  
उन्होंने पीपनी देते हुए हाथ बढ़ाया।



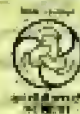


16

बच्चे पीपनी बजाने के लिए मास्टर जी की तरफ दौड़े।  
हम बजाएँगे - हम बजाएँगे - हम बजाएँगे।



2071



रु. 10.00

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्  
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

ISBN 978-81-7450-898-0 (बन्धन-सैट)  
978-81-7450-872-0